क्या शरीर में चिकित्सकों द्वारा निदानकृत रोग के अलावा अन्य रोग भी हो सकते हैं?

यदि हमारे शरीर के किसी भाग में कोई तीक्ष्ण वस्तु जैसे पिन, सुई, कांटा आदि चुभे तो सारे शरीर में छटपटाहट हो जाती है। आंखों में पानी आने लगता है, मुंह से चीख निकलने लगती है। शरीर की सारी इन्द्रियाँ और मन अपना कार्य रोक कर क्षण भर के लिये उस स्थान पर केन्द्रित हो जाते हैं उस समय न तो मधुर संगीत सुनना ही अच्छा लगता है और न मनभावन सुन्दर दृश्यों को देखना। न हंसी-मजाक अच्छी लगती और न अपने प्रियजन से बातचीत अथवा अच्छे से अच्छा खाना-पीना आदि। शरीर का सारा प्रयास सबसे पहले उस चुभन को दूर करने में लग जाता है। जैसे ही चुभन दूर होती है, हम राहत का अनुभव करते हैं। कहने का तात्पर्य यही है कि चाहे चुभन हो या आंखों में कोई कचरा चला जाये अथवा भोजन करते समय गलती से भोजन का कोई अंश भोजन नली के बजाय श्वास नली में चला जाये तो शरीर तुरन्त प्रतिक्रिया कर उस समस्या का प्राथमिकता से निवारण करता है। जिस शरीर में इतना आपसी सहयोग, समन्वय, समर्पण, तालमेल एवं अनुशासन हो अर्थात् शरीर के किसी भाग में पीड़ा अथवा दु:ख से सारा शरीर दु:खी हो तो क्या ऐसे शरीर में मधुमेह, बी.पी. या डॉक्टरों द्वारा किसी भी नाम विशेष द्वारा पुकारे जाने वाले छोटे-बड़े रोग पनप सकते हैं?आज स्वास्थ्य विज्ञान में लक्षणों के अनुसार रोगों के अलग-अलग नाम देकर उनकी व्याख्याएँ की जा रही हैं। शरीर को टुकड़ों-टुकड़ों में विभाजित कर उपचार और निदान किया जा रहा है। पूर्ण शरीर पर पड़ने वाले रोग के प्रभावों की उपेक्षा के कारण निदान और उपचार आंशिक एवं अधूरा ही होता है। रोग के मूल कारणों को गौण किया जा रहा है। मानों पेड़ को सुरक्षित रखने के लिए उसकी जड़ को सींचने की बजाय सूखे फूल, पत्तों को पानी दिया जा रहा है। वास्तव में अप्राकृतिक जीवन जीने के कारण शरीर की रोग प्रतिकारात्मक क्षमता क्षीण होने लगती है। परिणामस्वरूप शरीर में सैकड़ों अप्रत्यक्ष रोग अन्दर ही अन्दर पनपने लगते हैं, जिनकी तरफ हमारा ध्यान प्राय: नहीं जाता है और हम उन रोगों के कारणों की पूर्ण उपेक्षा करने लगते हैं। चिकित्सकों द्वारा जिन लक्षणों के आधार पर रोगों का निदान और नांमकरण किया जाता है, वे अकेले ही रोग नहीं होते, अपितु रोगों के परिवार के नेता होते हैं, जिन्हें सैकड़ों अप्रत्यक्ष सहायक रोगों का समर्थन प्राप्त होता है। परन्तु आज प्राय: चिकित्सकों का अप्रत्यक्ष रोगों की तरफ ध्यान ही नहीं जाता और न वे अप्रत्यक्ष रोगों को ही रोग मानते हैं। उपचार करते और करवाते समय चिकित्सक एवं रोगी का सारा प्रयास बाह्य लक्षणों को दूर कर नामधारी रोगों से राहत पाने का ही होता है।

जनतंत्र में नेता को हटाने का एक उपाय है। जिस सहयोग और समर्थन से उसका चयन होता है, उसकी ठीक विपरीत प्रक्रिया (असहयोग एवं विरोध) द्वारा उसको हटाया जा सकता है। बिना समर्थकों को अलग किये, जैसे नेता को बदलना सरल नहीं, उसी प्रकार रोग में अप्रत्यक्ष सहयोगियों रोगों की उपेक्षा कर रोग से पूर्ण रूप से मुक्त करने का दावा खोखला लगता है। ऐसा निदान और उपचार अधूरा ही होता है। अत: ऐसी चिकित्सा को मौलिक अथवा वैज्ञानिक मानने का दावा क्या न्यायोचित है?

– डॉ. चंचलमल चोरडिया

चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर,

थार हैण्डलुम के सामने, गोल बिल्ड़िग रोड़, जोधपुर-342003 (राज.)

(फोन) : 0291-2621454,2632267(घर), 2435471 (फैक्स),094141-34606(मोबाइल)

E-Mail :cmchordia.jodhpur@gmail.com

swachikitsa@therapist.net